International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(6): 152-154

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(6): 152-154
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 28-09-2017
Accepted: 29-10-2017

प्रेम सिंह
शोधार्थी (पी.एच.डी.), संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत।

Correspondence
प्रेम सिंह
शोधार्थी (पी.एच.डी.), संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत।

"शूद्र वर्ण की स्थिति" (मनुस्मृति के सन्दर्भ में)

प्रेम सिंह

प्रस्तावना

प्राचीन भारत के इतिहास के सुवर्णमय पन्नों में महर्षि मनु का नाम एक अग्रिम विधिशास्त्री, धर्मशास्त्री, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री एवं शिक्षाशास्त्री आदि विभिन्न रूपों में दृष्टिगोचर होता है। महर्षि मनु का समय प्राच्य विद्वान् भारतरत्न डॉ. पाण्डुरंग वामन काणे ने दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से ईसा के उपरान्त दूसरी शताब्दी के मध्य [1] एवं पाश्चात्य विद्वान् प्रो. मैक्समूलर एवं प्रो. बुहलर ने 185–100 ईसा पूर्व के मध्य [2] स्वीकार किया है। प्रो. बुहलर महर्षि मनु का समय ब्राह्मण राजा पुष्यमित्र शुंग के साथ जोड़ते हैं। [3] महर्षि मनु का समय ब्राह्मण राजा पुष्यमित्र शुंग के साथ इसलिए भी युक्तिसंगत प्रतीत होता है; क्योंकि मनुस्मृति में जो शासन, समाज एवं यज्ञ आदि व्यवस्थाओं का वर्णन किया गया है वह ब्राह्मण राजा पुष्यमित्र शुंग की शासन पद्धति से पूर्णतया समानता रखते हैं। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि महर्षि मनु, ब्राह्मण राजा पुष्यमित्र शुंग के समकालीन थे। कुछ मिथकों का मानना है कि पुष्यमित्र शुंग को ही पुरुषोत्तम राम के नाम से प्रचारित किया गया और उसने ही बौद्ध राजा बृहद्रथ मौर्य को नष्ट करके पुनः ब्राह्मण साम्राज्य की नींव रखी। महर्षि मनु ने मनुस्मृति नाम के ग्रन्थ का प्रणयन किया था। यह ग्रन्थ प्राचीन काल में जिस अवस्था में उपलब्ध था उसी अवस्था में वर्तमान काल में भी उपलब्ध होता है। यह ग्रन्थ 12 अध्यायों में विभाजित है और 12 अध्यायों में 2690 श्लोक हैं। इस ग्रन्थ को 'मानवधर्मशास्त्र' के नाम से भी जाना जाता रहा है। [4] यह ग्रन्थ 'प्रवचनशैली' में निबद्ध है। [5]

"मनुवाद एवं मनुवादी शब्दों का युक्तियुक्त अर्थ"

वर्तमान समाज में मनुवाद एवं मनुवादी शब्दों का प्रयोग सर्वत्र सुनने में आता रहता है। लोग मनुवाद एवं मनुवादी शब्दों के भिन्न–भिन्न अर्थ करते रहते हैं। किन्तु इन मनुवाद एवं मनुवादी शब्दों का युक्तियुक्त अर्थ क्या है ? यह विचार करने योग्य प्रश्न है। मनुवाद शब्द से मनुवादी शब्द जुड़ा हुआ है। एक शब्द के अर्थ प्राप्त को कर लेने पर दूसरे के अर्थ को प्राप्त करने में सहजता होती है। मनुवाद शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है– महर्षि मनु की विचारधारा और जो लोग इस विचारधारा का अनुगमन करने वाले होते हैं उन्हें मनुवादी शब्द से पुकारा जाता है। महर्षि मनु ने जो कुछ कहा है वेद सम्मत कहा है। उसको वेदों में देखा जा सकता है। [6] इसलिए महर्षि मनु की विचारधारा को प्रत्यक्षवादी विचारधारा के नाम से भी अभिहित किया जा सकता है।

"मनुस्मृति में समाज की संरचना"

महर्षि मनु के समय में समाज चार वर्णों में (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शुद्र) विभाजित था। ये चारों वर्ण महाप्रजापति ब्रह्मा के शरीर से उत्पन्न हुए थे। महाप्रजापति ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण, भुजाओं से क्षत्रिय, उरू से वैश्य एवं चरणों से शूद्र की उत्पत्ति हुई। [7] महाप्रजापति ब्रह्मा ने इन चारों वर्णों के नामों एवं कर्मों का विभाजन जन्म के आधार पर निश्चित किया था और प्रत्येक वर्ण पुनः पुनः जन्म लेने पर अपने पूर्व वर्ण में ही जन्म लेने लगा। [8] ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य वर्ण को द्विजाति कहा कहा जाता था और शूद्र वर्ण को एकजाति कहा जाता था। [9]

"शूद्र शब्द की व्युत्पत्ति, अर्थ एवं परिभाषा"

'शूद्र' शब्द की व्युत्पत्ति दो प्रकार से की जा सकती है। प्रथम के अनुसार– शूद्र शब्द 'शु' अव्यय पूर्वक 'द्रु गतौ' धातु से 'डः' प्रत्यय के योग से निष्पन्न होता है।

इसका अर्थ होता है– शु द्रवति इति शूद्रः अर्थात् जो स्वामी की आज्ञा से कार्य सम्पन्न करने हेतु इधर–उधर आता जाता है अथवा जो सेवा या श्रम का कार्य निस्वार्थ भाव से करता है उसे शूद्र कहते हैं। द्वितीय के अनुसार–शूद्र शब्द 'शुच् शोके' धातु से औणादिक 'रक्' प्रत्यय और 'च' को 'द' होकर निष्पन्न होता है और इसका अर्थ होता है चौथे वर्ण का पुरुष, हिन्दुओं के चार वर्णों में से अन्तिम वर्ण का पुरुष। [10]

शूद्र की परिभाषाः– शोच्यां स्थितिमापन्नः सः शुद्रः। अर्थात् जो अपनी निम्न स्थिति के कारण विषादग्रस्त एवं चिन्तायुक्त रहता है वह शूद्र कहलाता है।

महर्षि मनु ने अपनी कृति मनुस्मृति में शूद्र वर्ण की जो स्थिति वर्णित की है उसको निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार–विमर्श करके जाना जा सकता हैः–

(क) सामाजिक स्थिति।
(ख) राजनीतिक स्थिति।
(ग) धार्मिक स्थिति।
(घ) आर्थिक स्थिति।
(ड़.) शैक्षणिक स्थिति।

"क" "सामाजिक स्थिति"

मनुस्मृति में शूद्र वर्ण की जिस सामाजिक प्रतिष्ठा का वर्णन किया है, वह अपूर्व एवं अद्वितीय है। महर्षि मनु की दृष्टि में शूद्र वर्ण मनुष्य की श्रेणी में नहीं आता है, अपितु पशु की श्रेणी में आता है। महर्षि मनु ने शूद्र की तुलना गाय, हाथी, घोड़ा आदि के साथ की है। [11] तत्कालीन समाज में शूद्र का एक ही कर्त्तव्य–कर्म निर्धारित था, वह था, अपने वर्ण को छोड़कर अन्य सभी वर्णों की पशुवत् निस्वार्थ भाव से सेवा करना। [12] परन्तु उस सेवा में भी ब्राह्मण वर्ण की सेवा को विशिष्ट माना जाता था। [13] उस सेवा के प्रतिफल के रूप में महर्षि मनु ने शूद्र वर्ण के लिए जो वस्त्र एवं भोजन आदि की व्यवस्था की थी, वह शोभनीय एवं दर्शनीय थी। महर्षि मनु का द्विज वर्णों को स्पष्ट आदेश था कि द्विज वर्ण करुणापूर्वक शूद्र वर्ण को जीर्ण–शीर्ण वस्त्र एवं भोजन हेतु उच्छिष्ट (जुठन) आदि प्रदान करें। [14] शूद्र वर्ण के रहने का कोई निश्चित स्थान नहीं था। उसके सर्दी, गर्मी एवं वर्षा आदि से बचने हेतु घर की कोई व्यवस्था नहीं थी। जिस प्रकार बीहड़ जंगल में जंगली पशु कठोर विषम परिस्थितियों में रहते हैं उसी प्रकार शूद्र वर्ण भी घर के अभाव में कठोर विषम परिस्थितियों में रहता था। पशु जाति के जीवन में और शूद्र वर्ण के जीवन में किसी भी प्रकार का भेद नहीं किया जा सकता था। महर्षि मनु का कहना था कि शूद्र वर्ण को उसी स्थान पर निवास करना चाहिए, जिस स्थान पर उसे आजीविका उपलब्ध हो सके। [15] मनुस्मृतिकालीन समाज में विवाह की भी सुन्दर पद्धति प्रचलित थी। वैसे तो शूद्र वर्ण पूर्णतया बहिष्कृत था परन्तु भोग विलास के लिए उसकी स्त्री सभी वर्णों के द्वारा ग्रहण करने योग्य थी।

"ख" "राजनीतिक स्थिति"

शूद्र का एकमात्र कार्य था द्विज वर्णों की निःस्वार्थ भाव से सेवा करना। जब परमेश्वर ने शूद्र की उत्पत्ति ही सेवा के लिए की थी तब उसकी राजनीतिक स्थिति पर विचार करना ही निर्रथक है क्योंकि सेवा कार्य ही जिससे कराना है क्या वह कभी राजा बनने या सेना में सेनापति बनने का स्वप्न देख सकता है ? कदापि नहीं। मनुस्मृति में महर्षि मनु ने शूद्र के लिए जिस प्रकार के दण्ड़ की व्यवस्था की है वह अनुपम एवं अद्वितीय है। कहा गया है कि

शतं ब्राह्मणमाक्रश्य क्षत्रियो दण्ड़मर्हति।
वैश्योऽप्यर्धशतं द्वे वा शूद्रस्तु वधमर्हति।। मनु. 8/267।

अर्थात् यदि कोई क्षत्रिय किसी ब्राह्मण को अपशब्द कहे तो राजा सौ पण का दण्ड़ लगाये। वैश्य कहे तो डेढ़ सौ पण का दण्ड़ लगाये। परन्तु यदि शूद्र कहे तो उसके वध का यानि मृत्यु दण्ड़ दे। इस प्रकार कह सकते हैं कि शूद्र की राजनीतिक स्थिति शोचनीय एवं दयनीय थी।

"ग" "धार्मिक स्थिति"

महर्षि मनु ने शूद्र का बहिष्कार यहाँ तक कर दिया था कि वह किसी के मुत शरीर से भी हाथ नहीं लगा सकता था। इसका कारण था कि शूद्र के स्पर्श मात्र से वह स्वर्गलोक नहीं जा सकेगा। शूद्र वर्ण की ऐसा बहिष्कार होने पर उसकी धार्मिक स्थिति को जानने का औचित्य शेष नहीं रह जाता है। महर्षि मनु ने शूद्र वर्ण के लिए एकमात्र धर्म निर्धारित किया था वह था द्विज वर्णों की निस्वार्थ भाव से सेवा करना। महर्षि मनु का सुस्पष्ट आदेश था कि

यो ह्यस्य धर्ममाचष्टे यश्चैवादिशति व्रतम्।
सोऽसंवृतं नाम तमः सह तेनैव मज्जति।। मनु.4/81।

अर्थात् यदि कोई शूद्र को उपदेश या व्रत का सुझाव देता है तो वह भी शूद्र के साथ असंवृत्त नरक के घनघोर अन्धकार में जाकर पड़ता है।

शूद्र के लिए सभी प्रकार के धार्मिक अनुष्ठानों का निषेध था। [16] शूद्र के लिए यज्ञादि का भी निषेध था। [17] शूद्र के लिए सभी संस्कारों का भी प्रतिषेध था। [18] इस प्रकार कह सकते हैं कि शूद्र के लिए एकमात्र धार्मिक अधिकार द्विज सेवा ही था।

"घ" "आर्थिक स्थिति"

सर्वप्रथम तो सृष्टिकर्ता ब्रह्मा ने शूद्र वर्ण के लिए एकमात्र कर्म सेवा निर्धारित कर दिया वह भी पशुवत् निःशुल्क। निःशुल्क करने के कारण शूद्र के पास धन आया कहाँ से ? और फिर किसी तरह उसने कुछ एकत्र कर भी लिया तो इस पर भी महर्षि मनु का स्पष्ट आदेश था कि शूद्र के द्वारा उपार्जित धन को ब्राह्मण निस्संकोच भाव से छीन ले अर्थात् हरण कर ले। क्योंकि शूद्र को धन रखने का कोई अधिकार नहीं है। [19] शूद्र के धन संचय न होने देने के पीछे महर्षि का एक मूल कारण यह भी था कि यदि शूद्र के पास धन हो जाता है तो वह शूद्र ब्राह्मणों को ही कष्ट पहुँचाता है। [20] इस प्रकार शूद्र की आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय एवं शोषण भरी थी।

"ड़" "शैक्षणिक स्थिति"

महर्षि मनु ने जब शूद्र के भोजन के लिए मात्र जूठन ही देने का आदेश दे दिया तब शूद्र की शिक्षा का तो प्रश्न ही नहीं उठता है। प्रत्येक व्यक्ति के स्वतन्त्र जीवन में शिक्षा का उतना ही महत्त्व है जितना कि शरीर के लिए भोजन एवं वस्त्रादि का। क्योंकि जिस प्रकार भोजनादि के अभाव में शरीर नहीं चल सकता है उसी प्रकार शिक्षा के अभाव में व्यक्ति के बौद्धिक विकास एवं उचित अनुचित का बोध नहीं हो सकता है। शिक्षा से रहित व्यक्ति को यदि पशु भी कह दिया जाये तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। शूद्र को पशु तुल्य बनाने का सर्वश्रेष्ठ कार्य महर्षि मनु ने किया। महर्षि मनु का शूद्र की शिक्षा के विषय में स्पष्ट आदेश था कि शूद्र को शिक्षा वेदज्ञान प्राप्त करने का कोई अधिकार नहीं है। [21] और न ही शूद्र को कोई भी किसी भी प्रकार की शिक्षा दे। [22] इस प्रकार कह सकते हैं कि मनुस्मृति में शूद्र की स्थिति पशु से अधिक उत्तम नहीं थी।

उपसंहारः– निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि मनुस्मृति में शूद्र वर्ण की जिस दशा का वर्णन मिलता है वह असाधरण है। मनुस्मृति में शूद्र वर्ण की न तो सामाजिक स्थिति सुदृढ़ है; न राजनीतिक स्थिति सुदृढ़ है; न आर्थिक स्थिति सुदृढ़ है; न धार्मिक स्थिति सुदृढ़ है; और न ही शैक्षणिक स्थिति सुदृढ़ है। इस प्रकार कह सकते है कि शूद्र वर्ण को प्रत्येक स्तर पर नष्ट करने के लिए इतनी करुण दिखाने वाला महर्षि मनु के अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं जन्मा है।

संदर्भ सूची

1. डॉ.पी.वी.काणे–धर्मशास्त्र का इतिहास, भाग–1, पृ. 47।
2. डॉ.सुरेन्द्र कुमार–महर्षि मनु बनाम डॉ. अम्बेड़कर, पृ.27।
3. (वही), पृ.27।
4. (क) (वही), पृ.27,30।
   (ख) इत्येतन्मानवं शास्त्रं। मनु. 12/127।
5. (क) (वही), पृ.29।
   (ख) मनुस्मृति के भूमिका रूप प्रथम अध्याय के प्रथम चार श्लोकों में "मनुम्.....अभिगम्य महर्षयः.....वचनमब्रुवन्।।1/1। भगवन् सर्ववर्णानां.....वक्तुमर्हसि।।1/2। त्वमेको अस्य सर्वस्य.....कार्यं तत्त्वार्थवित् प्रभो।।1/3। प्रत्युवाच.....महर्षीन् श्रूयताम्।। 1/4।" आदि वचनों से व्यक्त होता है कि मनुस्मृति अपने प्रारम्भिक मूल रूप में महर्षियों की जिज्ञासा का महर्षि मनु द्वारा दिये गये उत्तर हैं, जो प्रवचन रूप में हैं। ये सभी श्लोक और विशेषत रूप से "सः तै पृष्टः" (1/5) पद का प्रयोग यह सिद्ध करता है कि इसे बाद में अन्य व्यक्तियों ने मिलकर संकलित किया है।
6. यः कश्चित्कस्यचिद्धर्मो मनुना परिकीर्तितः।
   सः सर्वोऽभिहितो वेदे.....।। मनु. 2/7।
7. (क) लोकानां तु विवृद्ध्यर्थं मुखबाहुरूपादतः।
   ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं शूद्रं च निरवर्तयत्।। मनु. 1/33।
   (ख) सर्वस्यास्य तु सर्गस्य गुह्यर्थं स महाद्युतिः।
   मुखबाहूरुपज्जानां पृथक्कर्माण्यकल्पयत्।। मनु. 1/89।
8. (क)सर्वेषां तु नामानि कर्माणि च पृथक् पृथक्। मनु. 1/23।
   (ख) यं तु कर्माणि यस्मिन्सन्ययुङ्क्त प्रथमं प्रभुः।
   स तदेव स्वयं भेजे सृज्यमानः पुनःपुनः।। मनु.1/30।
9. (क) ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यस्त्रयो वर्णाः द्विजातयः।
   चतुर्थ एकजातिस्तु शूद्रो नास्ति तु पंचमः।। मनु. 10/4।
10. वी.एस.आप्टे, संस्कृत–हिन्दी शब्दकोश, पृ. 1052 एवं उणादि. 2/19।
11. हस्तिश्चतुरङ्.गाश्च शूद्रा मलेच्छाश्चगर्हिताः।
    सिंहव्याघ्रवराहश्च।। मनु. 12/44।
12. एकमेव तु शूद्रस्य प्रभुः कर्म समादिशत्।
    एतेषामेव वर्णानां शुश्रूषामनसुयया।। मनु. 1/93।
13. विप्रसेवैव शूद्रस्य विशिष्टं कर्म कीर्त्यते। मनु. 10/120।
14. उच्छिष्टमन्नं दातव्यं जीर्णानि वसनानि च।
    पुलाकश्चैव धान्यानां जीर्णाश्चैव परिच्छदा।। मनु. 10/120।
15. शूद्रस्तु यस्मिन्स्तस्मिन्वा निवसेद्वृत्तिकर्षितः। मनु. 2/26।
16. न चास्योपदिशेद्धर्मं न चास्य व्रतमादिशेत्। मनु. 4/80।
17. न हि शूद्रस्य यज्ञेषु कश्चिदस्ति परिग्रहः। मनु. 11/13।
18. न शूद्रे पातकं किचिंन्न च संस्कारमर्हति।
    नास्याधिकारो धर्मेऽस्ति न धर्मात्प्रतिषेधनम्।। मनु. 11/123।
19. विस्रब्धं ब्राह्मणः शूद्राद् द्रव्योपादानमाचरेत।
    न हि तस्यास्ति किचिंत्स्वं भर्तृहार्यं धनो हि सः।। मनु. 8/416।
20. शक्तेनापि हि शूद्रेण न कार्योधनसंचयः।
    शूद्रो हि धनमासाद्यः ब्राह्मणानवबाधते।। मनु. 10/126।
21. शूद्रेण हि समस्तास्तावद्यावद्वेदे न जायते। मनु. 2/175।
22. न शूद्राय मतिं दद्यात्।मनु. 4/80।